NEERAJ®

New Syllabus

Reference Book Based on the Syllabus of

N.I.O.S.–D.El.Ed.

Bridge Course

PDPET

N-522

ikjfHkd fo|ky; h cPpk s dh le>

(Understanding Elementary School Child)

By : *Vaishali Gupta*

Published by:

NP

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Sales Office:
1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Price: ₹ 120.00

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Admn. Office : **Delhi-110007**
Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website*: **www.neerajbooks.com**

	Typesetting by: ***Competent Computers***	*Printed at*: ***Novelty Printer***

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc., given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc., see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
9. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajbooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajbooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110 006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

विषय–सूची

प्रारंभिक विद्यालयी बच्चों की समझ

(Understanding Elementary School Child)

Sample QUESTION PAPER - 1 (Solved)	1–3
Sample QUESTION PAPER - 2 (Solved)	1–3

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ

बच्चा और बचपन : सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ
(Child & Childhood : Socio-Cultural Context)

1.	बच्चा और बचपन की समझ **(Understanding Child and Childhood)**	1
2.	बचपन से किशोरावस्था में परिवर्तन **(Transition from Childhood to Adolescence)**	17
3.	बाल अधिकार **(Child Rights)**	37

अधिगम को सुसाध्य बनाना
(Facilitating Learning)

4.	बच्चे कैसे सीखते हैं? **(How Children Learn)**	47
5.	बचपन के सरोकार **(Childhood Concerns)**	68
6.	प्रेरक अधिगम वातावरण का सृजन करना **(Creating Conducive Learning Environment)**	79

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

Based on: National Institute of Open Schooling-D.El.Ed. (BRIDGE COURSE)

प्रारंभिक विद्यालयी बच्चों की समझ
(Understanding Elementary School Child)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 70*

सामान्य निर्देश: *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।*

प्रश्न 1. बालिकाओं की शिक्षा पर एक राष्ट्रीय समिति का गठन किस वर्ष हुआ था?

(क) 1958
(ख) 1959
(ग) 1963
(घ) 1964

उत्तर–(क) 1958

प्रश्न 2. शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन करना है।

(क) वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन
(ख) ध्यान वंश रुचि का अध्ययन
(ग) प्रेरणा व पुनर्बलन के प्रभाव का अध्ययन
(घ) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन

उत्तर–(क)वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन।

प्रश्न 3. प्रतिभाशाली बालक की क्या विशेषता होती है?

(क) सेवाभाव की प्रकृति
(ख) मानसिक बुद्धि की तीव्रता
(ग) अध्ययन में अरुचि
(घ) पर्यटन में रुचि

उत्तर–(ख) मानसिक बुद्धि की तीव्रता।

प्रश्न 4. समाज की उन्नति का मूल है।

(क) बालिका शिक्षा को कम महत्त्व मिले
(ख) केवल महिला अध्यापक हो
(ग) बालिका शिक्षा के लिए अलग विद्यालय हो
(घ) बालक और बालिका की शिक्षा दोनों के लिए एक समान हो।

उत्तर–(घ) बालक और बालिका की शिक्षा दोनों के लिए एक समान हो।

प्रश्न 5. पियाजे मुख्य रूप से किस प्रकार के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है?

(क)भाषा विकास
(ख)संज्ञानात्मक विकास
(ग) सामाजिक विकास
(घ) यौन विकास

उत्तर–(ख) संज्ञानात्मक विकास।

प्रश्न 6. श्रवण कौशल के विकास का आधार क्या है?

(क) लेखन
(ख) वाचन
(ग) घटना
(घ) पाठ

उत्तर–(ग) घटना।

प्रश्न 7. संज्ञानात्मक विकास कहलाता है–

(क) बच्चे का भाषिक विकास
(ख) शारीरिक एवं गतिक विकास
(ग) सामाजिक विकास
(घ) बच्चे की मानसिक क्षमता का विकास

उत्तर–(घ) बच्चे की मानसिक क्षमता का विकास।

प्रश्न 8. राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य बाधित बालकों की व्यवस्था की जाती है।

(क) राज्य स्तर द्वारा
(ख) केन्द्र स्तर द्वारा
(ग) स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा
(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर–(घ) उपर्युक्त सभी।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 9. बाल अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र संघ का सम्मेलन किस साल में हुआ?

(क) 1989

(ख) 1999

(ग) 1982

(घ) 1984

उत्तर–(क) 1989

प्रश्न 10. शिक्षक बालकों के व्यक्तिगत विभेद को किस प्रकार सर्वोत्तम तरीके से जान सकता है?

(क) मनोविज्ञान परीक्षण से

(ख) वाद-विवाद प्रतियोगिता से

(ग) निबंध-लिखवाकर

(घ) परीक्षा परिणाम से

उत्तर–(क) मनोविज्ञान परीक्षण से।

प्रश्न 11. बाल विकास के मुख्य पक्ष कौन-कौन से हैं?

(क) शारीरिक विकास

(ख) संज्ञानात्मक विकास

(ग) भाषिक संवेगात्मक

(घ) सामाजिक विकास

उत्तर–उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 12. इनमें से कौन-से शिक्षा के प्रमुख अभिकरण हैं–

(क) परिवार

(ख) विद्यालय

(ग) समुदाय

(घ) मीडिया

उत्तर–उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 13. आजकल किसी भी सूचना को प्रभावकारी ढंग से फैलाने का सशक्त माध्यम है।

(i) समाचार पत्र

(ii) पत्रिकाएं

(iii) मीडिया

(iv) टेलीफोन

उत्तर–*(iii)* मीडिया।

प्रश्न 14. समावेशी शिक्षा के मुख्य स्तंभ हैं–

(क) सामाजिक आधार

(ख) दार्शनिक आधार

(ग) मनोवैज्ञानिक आधार

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर–(घ) उपर्युक्त सभी।

प्रश्न 15. एक अच्छे शिक्षक में क्या गुण होने चाहिए?

(क) सहनशीलता

(ख) दयालु

(ग) गुस्से वाला या कठोर

(घ) जिसे विषय की पूर्ण समझ हो

उत्तर–(क) (ख) (घ)

प्रश्न 16. अशक्त बच्चों के लिए समाकलित शिक्षा की शुरुआत की गई

(i) 1974

(ii) 1977

(iii) 1982

(iv) 1999

उत्तर–*(i)* 1974

प्रश्न 17. किशोरावस्था को परिभाषित करें।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, प्रश्न 2

प्रश्न 18. स्वास्थ्य शिक्षा क्यों आवश्यक है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-69, प्रश्न 1

प्रश्न 19. बाल विकास की कौन-कौन-सी बुनियादी प्रक्रियाएं हैं?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 2

प्रश्न 20. समुदाय बच्चे का ज्ञान बढ़ाने में किस प्रकार सहायक होता है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-50, प्रश्न 3

प्रश्न 21. बाल अधिकारों से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-39, प्रश्न 1

प्रश्न 22. विकास के कितने चरण होते हैं?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 1

प्रश्न 23. भारतीय विद्यालयों की दशा पर संक्षिप्त टिप्पणी करें।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-81, प्रश्न 5

प्रश्न 24. शारीरिक विकास का क्या अभिप्राय है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, प्रश्न 4

प्रश्न 25. बच्चों के विकास के साथ-साथ उनके व्यवहार में कुछ परिवर्तन देखे जाते हैं, उसका क्या कारण है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-70, प्रश्न 5

प्रश्न 26. क्या बाल अधिकारों के तहत बच्चों को सुरक्षा मिल रही है?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-39, प्रश्न 4

प्रश्न 27. विद्यालय परिवेश के विभिन्न प्रकार कौन-से हैं?

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-83, प्रश्न 2

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

प्रारंभिक विद्यालयी बच्चों की समझ
(Understanding Elementary School Child)

बच्चा और बचपन : सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ
(Child & Childhood : Socio-Cultural Context)

बच्चा और बचपन की समझ
(Understanding Child and Childhood)

1

अध्याय का विहंगावलोकन

बाल-विकास का अध्ययन एक अत्यंत ही रोचक एवं कौतूहल भरा विषय है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह अध्ययन बरबस हमें अपने स्वयं की अतीत हो चुकी बाल्यावस्था की याद दिला जाता है, जब चिन्तारहित बालकमन आनन्दविभोर हो खेल-कूद कर अपने जीवन के उन स्वर्णिम पलों को व्यतीत करता है। यह मनुष्य के जीवन का वह समय होता है, जब बालकमन किसी भी प्रकार के राग-द्वेष से कोसों दूर रहता है और जहाँ कहीं उसे प्यार की अनुभूति होती है, वहीं निश्छल एवं निष्कपट भाव से रम जाता है।

विद्वानों के अनुसार बालकमन जन्म के पश्चात इतना लाचार नहीं होता है, वरन उसमें कुछ विशिष्ट क्षमताएं होती हैं, जो कालान्तर में परिपक्व होकर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। उपर्युक्त संदर्भ की पुष्टि एक अत्यंत प्राचीन लोकोक्ति भी करती है–''होनहार बिरवान के होत चिकने पात'' अर्थात जिस प्रकार फल देने की असीम सम्भावना वाले पौधों के पत्ते चिकने होते हैं उसी प्रकार होनहार बच्चे जन्म के समय ही विशिष्ट गुणों से लैस होते हैं, जिसकी पहचान जन्म के उपरान्त ही की जा सकती है।

सच्चाई चाहे जो भी हो (बच्चे का मन साफ स्लेट की तरह होता है या नहीं), परन्तु यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि बालकमन एवं प्रौढ़ के मन के स्तर में एकरूपता नहीं होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो बालकमन अपनी शैशवावस्था से प्रौढ़ मन की प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने तक एक निश्चित प्रक्रिया के दौर से गुजरता है।

विकास के प्रारंभिक–चरण

विकास के दृष्टिकोण से बच्चे अथवा बाल्यावस्था का वर्गीकरण आयु के संदर्भ में किया जाता है। मानव को किशोरावस्था के आरम्भ तक बच्चा समझा जाता है, जो सामान्यतया जन्म से लेकर लगभग बारह से तेरह वर्ष की अवस्था तक होती है।

अनुभव और निर्णय क्षमता भी बच्चे और प्रौढ़ में विभेद का आधार होती है। इस दृष्टि से एक चालीस-पचास वर्ष की आयु का व्यक्ति भी बच्चों की श्रेणी में ही होगा यदि उसमें बोध क्षमता, तर्क शक्ति एवं निर्णय क्षमता का अभाव हो। यही कारण है कि कई व्यक्ति इन मानवोचित क्षमताओं के अभाव में दूसरों का विश्वास खो बैठते हैं। ऐसे व्यक्तियों से प्रायः कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं करवाया जाता। हालांकि किसी क्रिया को उपयुक्त मानने का मानदण्ड समय तथा स्थान के अनुसार बदलता रहता है।

भारतीय परम्परा के परिप्रेक्ष्य में बचपन के निर्धारण का पैमाना बच्चा और उसके अभिभावक के बीच के सम्बन्ध के आधार पर होता है अर्थात व्यक्ति एवं उसके अभिभावक के बीच की कड़ी होकर उनके बीच रिश्तों की गर्माहट होती है। यही कारण है कि उम्र की एक लम्बी दूरी तय करने के पश्चात भी व्यक्ति अपने माता-पिता एवं उसी श्रेणी के सगे-संबंधियों की दृष्टि में हमेशा बच्चा ही बना रहता है, जिससे बाल्योचित गलतियां होने की सम्भावना हमेशा बनी रहती है। फलस्वरूप बात-बात में सुझाव देना अभिभावकों के लिए एक सामान्य बात हो जाती है।

बचपन की संकल्पना

बाल-विकास का अर्थ वस्तुतः समय के साथ-साथ बच्चों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से है। अतः बाल-विकास के अध्ययन के अंतर्गत यह समझने का प्रयास किया जाता है कि

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समय के साथ-साथ बच्चों के व्यवहार में होने वाले ये परिवर्तन क्यों और किस प्रकार होते हैं। वस्तुतः आम बोलचाल की भाषा में इन परिवर्तनों को विकास तथा संवृद्धि की संज्ञा दी जाती है, परन्तु ये दोनों संकल्पनाएँ एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। संवृद्धि का अर्थ मनुष्य के शरीर के अंगों में होने वाले परिवर्तनों से है, जिसमें उसके कद, वजन आदि में परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन परिमाणात्मक होते हैं।

इसके विपरीत विकास का अभिप्राय प्रकार्यात्मक तथा अंगेतर परिवर्तनों से होता है। ये परिवर्तन प्रायः गुणात्मक होते हैं। उदाहरणस्वरूप, बुद्धि का विकास।

विकास एवं संवृद्धि के बीच दूसरा अन्तर यह है कि विकास एक जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जबकि आंगिक विकास एक निश्चित समयावधि के पश्चात परिपक्व हो जाता है एवं उसमें वृद्धि की संभावनाएँ लुप्त हो जाती हैं।

संवृद्धि एवं विकास के बीच एक अन्तर यह भी है कि संवृद्धि हमेशा एक व्यवस्थित एवं सकारात्मक परिवर्तन की जनक होती है। इसके विपरीत विकास की दशा में यद्यपि सामान्यतया सुव्यवस्थित और सकारात्मक परिवर्तन ही होता है, परन्तु किसी विशेष परिस्थिति में यह परिवर्तन पतन की ओर भी उन्मुख कर सकता है।

बाल-विकास की अवस्थाएँ

बच्चों के विकास के विभिन्न चरण होते हैं, जो अन्य चरणों के साथ एक व्यापक सहसंबंध होने के बावजूद अपनी अनन्य विशिष्ट आवश्यकताओं और अपेक्षाओं से पूर्ण होते हैं। विकास के ये चरण निम्नलिखित होते हैं-

1. प्रसव पूर्व अवस्था
2. नवजात काल
3. शैशव काल
4. प्रारंभिक बाल्यकाल (प्राग्विद्यालयी वर्ष)
5. मध्य बाल्यकाल (विद्यालयी वर्ष)
6. किशोरावस्था

1. **प्रसव पूर्व अवस्था**—युग्मनज (निषेचित अंडे) के निर्माण से जीवन आरम्भ होता है। गर्भधारण के पश्चात पहले एक-दो घंटे के भीतर ही निषेचित अण्डा दो कोशिकाओं में विभाजित हो जाता है। दस घंटे के पश्चात ये कोशिकाएँ चार कोशिकाओं में विभाजित हो जाती हैं। इसके बाद प्रत्येक दस घंटे में ये चार से आठ, आठ से सोलह आदि भागों में विभाजित होकर इन कोशिकाओं की संख्या में वृद्धि करती जाती हैं। इस प्रकार कोशिकाओं के विभाजन की प्रक्रिया गर्भाधारण के बाद आठ सप्ताह तक चलती रहती है। यह अवस्था भ्रूणावस्था कहलाती है, जिसमें भ्रूण की पहचान मानव जीवन के रूप में हो जाती है।
युग्मनज निर्माण पिता के शुक्राणु का माता के अंडे के साथ संलयन के फलस्वरूप होता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है। पिता का शुक्राणु और माता का अंडा अन्य बातों के अलावा जीन्स के रूप में आनुवंशिक अभिलक्षणों का वहन करते हैं।
2. **नवजात काल**—यह अवस्था लगभग दो सप्ताह की होती है, जिसमें बच्चा शारीरिक तौर पर अपने आपको नए परिवेश में ढालता है। सामान्यतः इस समय एक नवजात शिशु का औसत वजन लगभग 7 पौंड तथा औसत ऊँचाई लगभग 20-22 इंच होती है।
3. **शैशव काल**—नवजात काल से 2 वर्ष तक की आयु तक शैशव काल कहलाता है। इस काल में बच्चे का विकास अत्यंत ही तीव्र गति से होता है। इस अवधि में गतिक विकास अर्थात मांसपेशियों का संचालन अत्यधिक होता है। इस समय में बच्चा स्वेच्छा से हिलने-डुलने की क्षमता विकसित कर लेता है।
4. **प्रारंभिक बाल्यकाल (प्राग्विद्यालयी वर्ष)**—जीवन के तीसरे वर्ष से आरंभ होकर 5-6 वर्ष की आयु प्रारंभिक बाल्यकाल की अवधि कहलाती है। इस चरण को प्राग्विद्यालयी चरण भी कहते हैं। इस आयु वर्ग में बच्चे में असीम कल्पनाशक्ति की संभावनाएँ होती हैं। शैशव काल की तुलना में इस काल में वृद्धि की दर अपेक्षकृत धीमी, परन्तु स्थिर होती है।
5. **मध्य बाल्यकाल (विद्यालयी वर्ष)**—जीवन के छठे वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक की आयु मध्य बाल्यकाल अथवा विद्यालयी वर्ष कहलाती है। इस अवस्था में वृद्धि की दर धीमी, किन्तु स्थिर रहती है। इस अवस्था में उसकी ऊँचाई में वृद्धि का एक मुख्य कारण बच्चे की टाँगों की लम्बाई बढ़ना होता है। इस अवस्था में बच्चे चलने, दौड़ने, फेंकने आदि जैसे गत्यात्मक कौशलों में दक्षता हासिल कर लेते हैं। बच्चों में चिन्तन की योग्यता का विस्तार होने के कारण जानकारी का भंडार भी बढ़ता है।
6. **किशोरावस्था**—बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच के संक्रमण काल को किशोरावस्था कहा जाता है। इस अवस्था में बच्चे की लम्बाई पूरी हो जाती है, आंतरिक अंग और तंत्र प्रौढ़ व्यक्ति के आकार के हो जाते हैं और बच्चे में लैंगिक रूप से भी परिपक्वता आ जाती है।
7. **व्यक्ति का विकास एक एकीकृत समग्र के रूप में**—यद्यपि विभिन्न व्यक्तियों में जैविक, बौद्धिक और

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

मनोवैज्ञानिक विकास तथा समाकलन का स्तर अलग-अलग हो सकता है, फिर भी ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं होता जिसके विकास के किसी भी चरण में शारीरिक क्रियाओं, मानसिक योग्यताओं तथा व्यक्तित्व संगठन के एकीकरण में कमी हो। यदि संतुलन की कमी है तो भी मानव विकास में एक प्रकार की समग्रता अवश्य ही मौजूद रहती है।

बाल-विकास के पक्ष

मानव जीवन में होने वाले विकास के पक्ष निम्नलिखित हैं–

1. **शारीरिक एवं गतिक विकास**–गर्भाधान के समय से लेकर ही बच्चे के शरीर के आकार एवं संरचना में आनुपातिक परिवर्तन आते हैं, जिसे आमतौर पर शारीरिक विकास की श्रेणी में रखा जाता है।

इस अवस्था में बच्चा अपने शारीरिक विकास के साथ-साथ अपने परिवेश को अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग करना भी सीखता है। इसी समय बच्चा गतिक विकास अर्थात शरीर के संचलन को नियंत्रित करने की योग्यता भी सीखता है।

गतिक विकास दो प्रकार का होता है–

(1) स्थूल गतिक विकास। इसके अंतर्गत बड़े आकार की मांसपेशियों से संबधित कौशल जैसे दौड़ना, उछलना, कूदना, साइकिल चलाना आदि सम्मिलित हैं।

(2) अंगुलियों, कमर और हाथ एवं आँखों के समन्वय का विकास। पेशीय कौशलों का विकास, इनका परिपक्व होना और अधिगम-अक्सर इन्हीं दोनों के द्वारा निर्धारित होते हैं।

2. **संज्ञानात्मक विकास**–संज्ञानात्मक विकास बच्चे की मानसिक क्षमता में विकास और परिवर्तन से जुड़ा है। ये परिवर्तन शैशव काल में आरंभ होते हैं और किशोरावस्था में आते-आते परिपक्वता को प्राप्त कर लेते हैं। इस विकास के अंतर्गत अनेक योग्यताएं सम्मिलित होती हैं, यथा–अवधान, प्रत्यक्षण, स्मृति, चिन्तन, समस्या समाधान तथा वृद्धि।
3. **भाषिक विकास**–भाषिक विकास का अभिप्राय उस माध्यम से है, जिसके द्वारा बच्चा अपनी मनोभावनाओं को अपने इच्छित व्यक्ति तक आसानी से पहुँचा सकता है। पठन एवं लेखन कौशलों का विकास इसी के अंतर्गत शामिल है।
4. **समाजिक विकास**–बच्चे के सामाजिक विकास का अर्थ, उसके द्वारा अपने परिवेश में उपस्थित व्यक्तियों से उपयुक्त संबंध स्थापित करने की योग्यता होती है।
5. **संवेगात्मक विकास**–संवेगात्मक विकास का अर्थ है–एक चरण से दूसरे चरण की ओर अग्रसर होने की स्थिति। बाहरी रूप से तो यह भाषा अथवा शब्दावली के द्वारा व्यक्त होती है, परन्तु इस अभिव्यक्ति के पीछे आंतरिक रूप से तीन प्रकार के अनुभव निहित होते हैं, जो कभी स्पष्ट होते हैं, तो कभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं होते हैं।
6. **अभिप्रेरणात्मक विकास**–अभिप्रेरणा का अर्थ प्रेरित करने से है। उदाहरण के तौर पर यदि बच्चा रोता है, तो संभव है कि इसके लिए अभिप्रेरक का कार्य उसकी भूख, प्यास अथवा अन्य किसी आवश्यकता ने किया हो।

वस्तुतः आवश्यकताएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं, जिनको मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(क) शरीर क्रियात्मक आवश्यकता, तथा

(ख) अन्य स्तरीय आवश्यकताएँ।

पहली आवश्यकता के अंर्तगत भोजन, पानी, वस्त्र, घर आदि की आवश्यकताएँ आती हैं। स्तरीय आवश्यकताएँ मुख्य रूप से प्रकृति में मनोवैज्ञानिक होती हैं। इनमें प्यार, उद्दीपन, उपलब्धि, संबद्धता शक्ति आदि की आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं।

7. **समाकलित व्यक्तित्व का विकास**–उपर्युक्त वर्णित विकास के पहलू एक-दूसरे से अलग न होकर अंतर्संबंधित एवं कुछ हद तक अन्योन्याश्रित होते हैं।

पारंपरिक भारतीय संदर्भ में बच्चे

पारंपरिक भारत में बच्चों की दशा बहुत अच्छी नहीं थी। उसका मुख्य कारण था परिवारों का बड़ा आकार होना तथा माता-पिता का अशिक्षित होना। परंपरागत समय में परिवार में प्रायः 5-6 बच्चे होना एक स्वाभाविक सी बात थी, जिसके कारण उनकी परवरिश पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था। इसी कारण से भारत में शिशु मृत्यु दर भी बहुत ज्यादा। समाज में लड़के-लड़की का भेदभाव किया जाता था, जिसके कारण लड़कियों को अधिक शिक्षा नहीं जाती थी। माता-पिता अशिक्षित होते थे, इसलिए बच्चों के स्वास्थ्य का भी पूर्ण ज्ञान नहीं था। समय के साथ-साथ समाज में शिक्षा को अधिक महत्त्व दिया गया, जिससे लोगों को समझ आया कि परिवार सीमित होना चाहिए।

बचपन की विभिन्न समस्याएं एवं परिदृश्य

मनोवैज्ञानिक–बच्चे प्रत्येक परिवार के सबसे महत्त्वपूर्ण सदस्य होते हैं। क्या बच्चों के बिना हम अपने जीवन की कल्पना कर सकते हैं? निश्चित ही नहीं। बच्चे हमारे जीवन में आशाएं और खुशियाँ लेकर आते हैं। कल्पना करें कि यदि हमारे साथ बच्चे नहीं होंगे तो हमारा क्या होगा। मानव जाति को जीवित रखने के लिए भावी पीढ़ियां विद्यमान ही नहीं होंगी। बच्चे समुदाय और देश की परिसंपत्ति हैं।

हमारे देश में 18 वर्ष से कम आयु का प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो अथवा महिला, बच्चा कहलाता है। उसे उत्तरजीविता, पालन-पोषण, संरक्षण और प्रसन्न एवं स्वस्थ बचपन जीने का अधिकार है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बच्चों को स्नेह देने, उनकी देखभाल करने तथा उनके साथ सम्मान और मर्यादा का व्यवहार किए जाने की आवश्यकता है। वे भी उसी प्रकार के मनुष्य हैं, जिस प्रकार वयस्क व्यक्ति और भविष्य के वयस्क भी।

जिस बच्चे की सही रूप से देखभाल और उसका सही पालन-पोषण होगा, वह बच्चा निश्चय ही एक जिम्मेदार नागरिक बनेगा और अपने गांव व देश के निर्माण में योगदान दे सकेगा। बच्चों को हमसे आज जिस प्रकार की देखभाल और व्यवहार मिलेगा उसी के अनुरूप उनके भविष्य की नींव पड़ेगी और साथ ही एक सभ्य मनुष्य व समाज के सदस्य के रूप में उनके व्यक्तित्व का निर्माण होगा।

भारत में हमारी कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत भाग बच्चे हैं। चूंकि अधिकांश लोग गांवों में रहते हैं, गांवों में रहने वाले बच्चों की संख्या भी शहरों में रहने वाले बच्चों की तुलना में अधिक है। अत: पंचायतों के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वे बच्चों की देखभाल, उनके संरक्षण और विकास संबंधी महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समझें तथा बच्चों के श्रेष्ठ हित में आवश्यक कदम उठाएं।

बालकों और बालिकाओं की आवश्यकताएं, विकास की विभिन्न अवस्थाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए-शिशुओं, युवा बच्चों और किशोरों की आवश्यकताएं भिन्न-भिन्न होती हैं। यहां तक कि समान आयु-वर्गों में भी, विभिन्न सामाजिक संरचनाओं में उनकी आवश्यकताएं भिन्न-भिन्न होती हैं। आइए जानें कि बच्चे किस प्रकार खतरों के संभावित शिकार होते हैं।

उत्तरजीविता संबंधी संकट—अपनी आयु के प्रारंभिक वर्षों में बच्चे जीवित रहने संबंधी अनेक संकटों का शिकार हो सकते हैं, जैसे उनकी माताओं की प्रसवपूर्व खराब देखरेख के फलस्वरूप नवजात शिशु खराब स्वास्थ्य, कुपोषण, बीमारियां और संक्रामण के शिकार हो सकते हैं। विशेष रूप से गरीब और वंचित परिवारों के बच्चों का अल्पशोषण का शिकार होने की संभावना अधिक रहती है। अत: हमारे देश में प्रत्येक वर्ष 0-5 की आयु-वर्ग में मरने वाले बच्चों की संख्या ऐसे परिवारों में अधिक होती है। उपर्युक्त सभी विषम परिस्थितियों में, निर्धन परिवारों के बच्चों, विशेष आवश्यकताएं रखने वाले बच्चों तथा बालिकाओं का जोखिम का शिकार होने की संभावना अधिक होती है। अत: उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए हमें उनकी सहायता करने की आवश्यकता है।

हमारे बच्चे कैसे सुरक्षित और स्वस्थ रहें और कैसे उनका बेहतर विकास हो? इन समस्त मुद्दों का निराकरण करने के लिए भारत के संविधान के तहत बच्चों को विभिन्न अधिकार प्रदान किए गए हैं। राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर बच्चों के पक्ष में विभिन्न कानून पारित किए गए हैं तथा नीतियां और कार्यक्रम आरंभ किए गए हैं।

परिवार पड़ोस, विद्यालय और शिक्षक की भूमिका

परिवार व्यक्ति के जीवन की प्रथम संस्था है जहाँ उसका पालन-पोषण होता है। घर में ही बच्चा एक साथ रहने की प्रक्रिया सीखता है। अभिभावक उसके प्रथम शिक्षक होते हैं। वे भावनात्मक तथा व्यक्तिगत सुरक्षा प्रदान करते हैं। घर में ही बच्चा अपनी आयु व क्षमता के अनुरूप अपनी भूमिकाओं को समझकर व्यवहार करने का प्रयास करता है। घर में ही बच्चे को मानवीय सम्बन्धों तथा सामाजिक कौशलों के साथ मूल्यों की शिक्षा भी मिलती है। इसी कारण घर की पारिवारिक जीवन शिक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

व्यक्तित्व निर्माण में घर की भूमिका—व्यक्तित्व का निर्माण आनुवंशिकता तथा वातावरण से सम्बन्धित है। व्यक्तित्व निर्माण के ये दोनों घटक परिवार पर ही निर्भर हैं। घर के वातावरण का बच्चे के व्यवहार पर सृजनात्मक प्रभाव पड़ता है। परिवार में ही बच्चा सुख-दुख की अनुभूति करता है। परिवार के सदस्यों का व्यवहार उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। वह समस्याओं से लड़ना और आत्मविश्वास जैसे गुण घर से ही ग्रहण करता है। वह सम्बन्धों को समझना और उन्हें बनाए रखना परिवार में ही सीखता है।

घर एवं चरित्र निर्माण—चरित्र से ही व्यक्ति को वह शक्ति मिलती है, जिससे वह अच्छा आचरण करता है और जीवन में उच्च मूल्य बनाए रखता है। चरित्र हमें ईमानदारी, दृढ़ता, न्याय, स्व-नियंत्रण के मूल्य प्रदान करता है तथा चरित्र निर्माण की प्रक्रिया घर से ही आरंभ होती है। अभिभावकों के आचरण और उनके द्वारा सिखाए मूल्यों के अनुसरण से ही बच्चे का चरित्र बनता है।

घर के पश्चात बच्चे को ज्ञान प्रदान करने तथा उसके समाजीकरण की दूसरी संस्थापना विद्यालय है। बच्चा विद्यालय में अपना काफी समय बिताता है और सहपाठियों तथा अध्यापकों के संपर्क में रहता है। पारिवारिक जीवन शिक्षा देने में विद्यालय अहम भूमिका निभाता है। अभिभावक अनेक विषयों में विशेषकर यौन विषयों में परंपरागत होते हैं, जिसके कारण वे बच्चों की यौन सम्बन्धी जिज्ञासा को दबाने का प्रयास करते हैं। कुछ मुद्दों पर उनके पास पर्याप्त ज्ञान न होने से भी वे बच्चे में पारिवारिक जीवन शिक्षा के कौशलों को विकसित नहीं कर पाते। इससे बच्चों के स्वसथ दृष्टिकोण का निर्माण बाधित होता है। अत: विद्यालय की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि वह बच्चों की पारिवारिक जीवन शिक्षा का दायित्व उठाए। विद्यालय एक औपचारिक, संगठित तथा पद्धतिपूर्ण तंत्र होने के कारण भली प्रकार शिक्षा दे सकता है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com